अंतरा-शब्दशक्ति

अनंत पथ पर महानदी

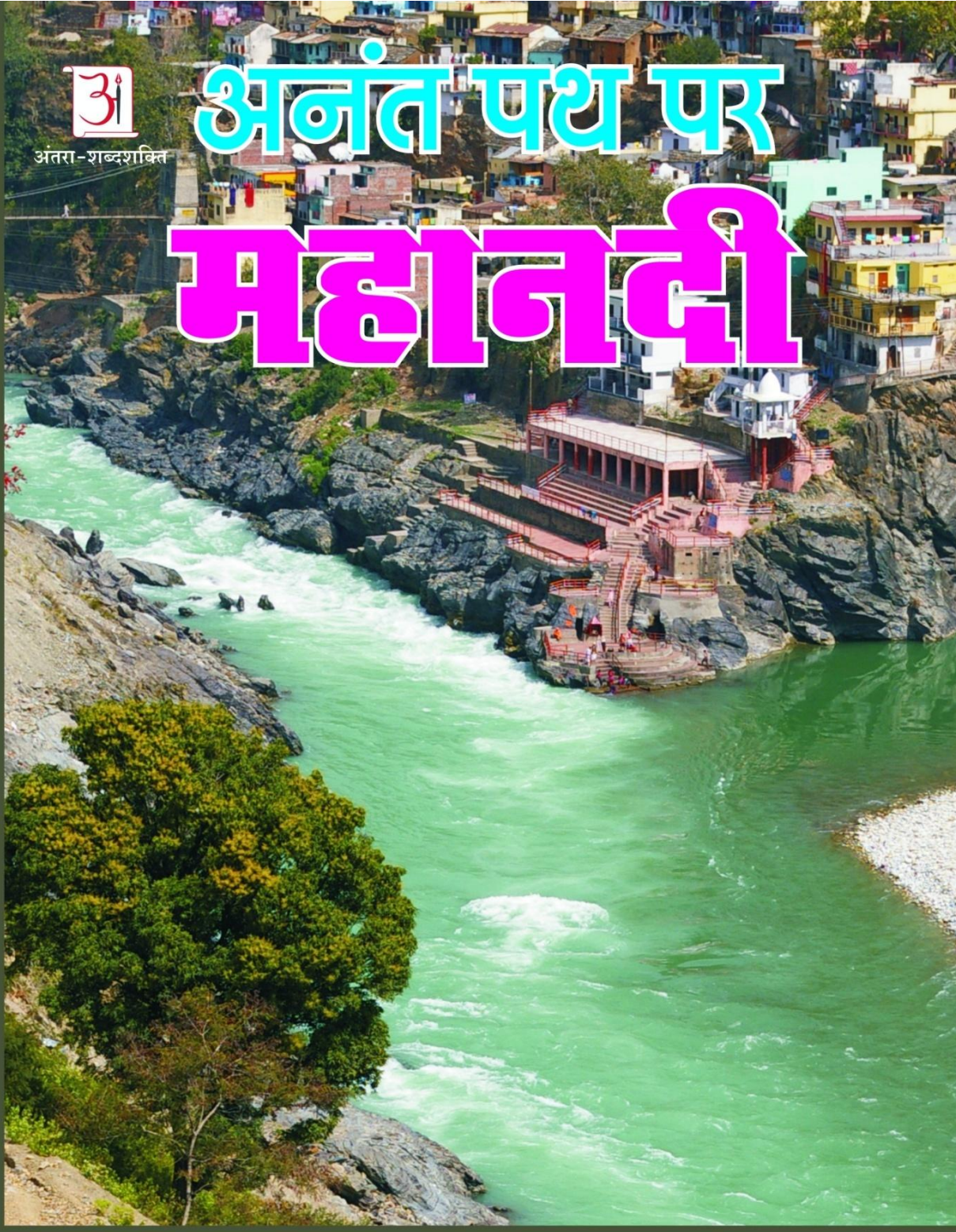

काव्य संग्रह

सुधा शर्मा

अनंत पथ पर महानदी
(काव्य संग्रह)

सुधा शर्मा

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-52-0

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © सुधा शर्मा

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Anant path par mahanadi' by 'Sudha Sharma'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

भूमिका

इस संग्रह की सभी रचनाएँ महानदी पर ही केंद्रित हैं। महानदी छत्तीसगढ़ की जीवन रेखा है, जो सिहावा के महेंद्रगिरी पर्वत से प्रवाहित होकर उड़ीसा को सिंचित कर बंगाल की खाड़ी में समाती है। इस नदी पर अनेक बाँध बने हैं, जिसमें हीराकुंड प्रमुख बाँध है। इसके प्रवाहित पथ पर अनेक तीर्थस्थल हैं, जो धर्म और आस्था की दृष्टि से अपनी अलग महत्ता रखते हैं। राजिम छत्तीसगढ़ का प्रमुख तीर्थ स्थल है, जहाँ भगवान राजिवलोचन और संगम पर कुलेश्वरनाथ विराजित हैं, जो विश्व प्रसिद्ध आस्था का केंद्र हैं। राजिम में तीन नदियाँ- पैरी, सोंढ़ुल और महानदी का संगम होता है। इसी त्रिवेणी संगम के कारण सदियों से यहाँ एक बड़े भू-भाग में मेला लगता है, जो माघ की पूर्णिमा से महाशिवरात्री तक आयोजित होता रहा है।

विगत दस-बारह वर्षों से इस मेले को कुंभ का दर्जा देते हुए इसके आयोजन को वृहत रूप दिया गया है, जो देश-विदेश के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है और राजिम मेले की प्रसिद्धि बढ़ गई है। परंतु तस्वीर का एक दूसरा पहलू भी है कि अब मुख्य मेला स्थल के अलावा भी नदियों के बीच में मेला संपन्न कराया जाता है, जिसके लिए बरस-दर-बरस नदियों पर मुरूम बिछाकर सड़कें बनाई जाती हैं और नदियों के प्रवाह को कई भागों में विभक्त कर दिया जाता है, जिसके कारण यह संगम ग्रीष्म में पूरी तरह मैदान-सा दिखाई देता है। आज पर्यावरण के बिगड़ते तेवर से हम अनभिज्ञ नहीं हैं। दिन-रात नदियों की रेत का खनन कर सांस्कृतिक धरोहर का वजूद खत्म किया जा रहा है।

एक वह दिन भी था जब नदियाँ अपने प्राकृतिक स्वरूप में प्रवाहित होती, सुंदरता को अभिव्यक्त करती थीं, परंतु आज वस्तुस्थिति देखकर अतीव पीड़ा होती है। इसी पीड़ा की अभिव्यक्ति 'महानदी' खंड काव्य के रूप में की गई, परंतु मेरी पीड़ा यथावत ही है। समय के साथ, माँ चित्रोत्पला जो महज एक नाले के रूप में परिवर्तित हो गई है, उसे शब्दांजलि के रूप में भाव अर्पित होते रहे, जिसे संग्रह का रूप दिया गया है।

महानदी एक सत्य है और अन्य नदियों की सत्यता का प्रतीक भी। आज प्राय: हर नदी मृत्यु के कगार पर है, जो देर-सबेर भूमिगत होने को हैं। क्या हमारी संवेदना बिलकुल ही खत्म हो गई है ? क्या हमारा विवेक सो गया है ! महानदी सर्व नदियों की पीड़ा गाती अवदान करती चली जा रही है और हम उसे जाते हुए देखे जा रहे हैं, अनंत पथ की ओर..!

सुधा शर्मा, राजिम

अनुक्रमणिका

1. जय जय जय हे महानदी	5
2. महानदी बहती चली	6
3. लहर लहर लहराती लहरिया	7
4. नीरदानी ! ओ नीरदानी !	8
5. लो सज उठा फिर महानदी का पाट	9
6. गंग आरती करा रहे हैं	10
7. जल रही है महानदी	11
8. माँ! चित्रोत्पला को बचाओ	12
9. जय-जय शिवशंकर	13
10.क्या दोगे भावी पीढ़ियों को?	14
11.किसके आगे पट खोलूँ?	15
12.बढ़े चलो, हे सरणी-सुतों !	16

जय जय जय हे महानदी

उतुंग शिखर से झरझरी, बहती आई
महानदी
कंकनंदिनी कहलाई, बहती रही
सदियों सदी
जय महानदी जय महानदी, जय
जय जय हे महानदी।

विमल चारू मंजुल धारा
अवनी पर आँचल पसारा
तृप्त कर पालिनी सबको
बाँटती अमृत रस धारा
पथिक नित अविराम चलती, तनिक
श्रांत न रुकी कभी
जय महानदी जय महानदी, जय
जय जय हे महानदी।

डोलता-सा लगे भूधर
छाती चीर बहे निर्झर
स्वपथ प्रवाहित वेगवती
दुग्ध धार बहे अविरल
दग्ध तृषित धरा का दामन, तृष्णा
मिटाती है त्रिपदी
जय महानदी जय महानदी, जय
जय जय हे महानदी।

कमल अंचल की गर्विता
है परम पावन पुनीता
मन प्रांगण में आन बसी
जीवनदायी माँ सरिता
चित्रोत्पला तू नीलोत्पला, हरिहर
चरण धूलि धोती
जय महानदी जय महानदी, जय
जय जय हे महानदी।

वंदना करूँ माँ तेरी
ये साँस-साँस है अर्पण
है अक्षर-अक्षर अर्पित
भाव-भाव तेरा पूजन
ओ अमर गंगे त्रिवेणी, स्वीकृत करो
भावांजलि
जय महानदी जय महानदी, जय
जय जय हे महानदी।

महानदी बहती चली

तोड़कर पथ की वर्जनाएँ, खिलकर वह हँसती चली
महामेघ गर्जना करती, फिर महानदी बहती चली।

पहाड़ों पर खिलखिलाती, गुनगुनाते हैं अनुपम झरने
घने बादलों मध्य चमकती, चपला-सी चंचल लहरें
नव सुरों से ध्वनित वीथिकाएँ, मधुर गुंजन करती चली
महामेघ गर्जना करती, फिर महानदी बहती चली।

तारा पथ को आच्छादित करते, काले-काले घनघोर पहरे
लहराती बलखाती आती, वारुणी की सर्पीली लहरें
फुफकारती-सी उतंग तरंगें, फेनिल तट करती चली
महामेघ गर्जना करती, फिर महानदी बहती चली।

हमराह बनती पैरी-सोंढ़ुल, छल-छल छलकातीं पानी
संगम पर आकर्षित करतीं, चढ़ती उफनती जवानी
मन की उत्कंठा बढ़ातीं, कण-कण हर्षित करती चली
महामेघ गर्जना करती, फिर महानदी बहती चली।

संग-संग बहा ले जाती पंकिल, पथ की सारी कंटिकाएँ
जीवन मुक्त कर देती, जीवों को उर आगोश समाए
अनवरत अथक बहती जाती, गज गर्जन करती चली
महामेघ गर्जना करती, फिर महानदी बहती चली।

लहर लहर लहराती लहरिया

लहर लहर लहराती लहरिया
लेकर ललित लहरों की लड़ियाँ
चिर चिरतम है पावन सलिला
तन मन विमल करती निर्मला।

पग पायलें कटिबंध कंकणियाँ
यौवन बंध चीर-चीर चुनरिया
भाग रही वह सरपट बावरिया
सिंधु सजन मिलने को सजनिया।

पर्वत कानन उछलती हिरणियाँ
कुलाँचें भरती डगर डगरिया
सरसाती नित सम्यक सलिला
जोश जवानी भरी उमरिया

छम छम नर्तन करती नर्तनियाँ
चंचल चारु चपला-सी उर्मियाँ

झर-झर झरती लहरें झरझरी
नदी राग सुनाती निर्झरा।

भँवर जाल बनाती आकुल बहियाँ
जल तरंग बजती मधुर ध्वनियाँ
कभी थिरकती कभी मचलती
करती है कहीं रौद्र गर्जनियाँ।

अंतर कुंड में बाँधे बेड़ियाँ
लपेटती मुक्त करती उर्मियाँ
करे पथिकों को दुलारकर
जीवन मृत्यु अटखेलियाँ।

भाव भरती वारुणी वत्सला
छलकाती भर-भर नेह गगरिया
अतुल वेग से गमन करती
नित नूतन पथ सर्जनिया।

नीरदानी ! ओ नीरदानी !

नीरदानी ! ओ नीरदानी !
सूख गया तेरा पानी
पीड़ा तेरी कोई न जाने
कर रहे सब मनमानी।

लहराती बलखाती थी
तू सुखदा कहलाती थी
क्यूँ आज निर्धन हो चली
लूट रही तेरी धानी।

राजनीति तेल हो गया
स्वार्थ का खेल हो गया
रूप मनोरम बिगड़ गया
पंकिलमय हुआ पानी।

त्यागती तू सुख सर्वदा
देती जीवन तू वरदा
सदियाँ गीत गाती है
आज नयनों में क्यूँ पानी?

लो सज उठा फिर महानदी का पाट

लो सज उठा फिर महानदी का पाट
बैठ गए सीने पर अनेक रंगीन हाट।

विद्युतीय आभा से चमक उठा दामन
फिर कत्ल होने को श्रृंगारित है दुलहन।

पीर समाए हृदय में मैला सकल ढोएगी
प्रवाह पथ पर निज अस्तित्व खोएगी।

आस्था के नाम पर होंगे धर्म-कर्म सारे
फिर चित्रोत्पला रोएगी आँचल पसारे।

कुंभ का भरा नीर सड़ांध गंधिला जाएगा
और त्रिवेणी का दामन पूर्णतया सूख जाएगा।

यह करुण मार्मिक दृश्य सब देखते रह जाएँगे
मौन साधे हर बरस ऐसे ही कुंभ सजाएँगे।

जाने किस लिप्सा में सजा रहें हैं बाजार
क्षणिक मनोरंजन हेतु कर रहे हैं अत्याचार।

हाट बाजार बहुत मिलेंगे गाँव गली चौराहे पर
महासलिला बाट जोहती जीवन के दोराहे पर।

समझ नही पा रही अब वह रोए या मुस्काए
कब तलक चुप्पी साधे अस्मिता की बलि चढाए।

अब भी वक्त है लोगों कुंभ नही मेला मनाओ
महत्ता बढे पद्मक्षेत्र की त्रिवेणी संगम बचाओ।

गंग आरती करा रहे हैं

बंधित पानी छोड़कर देखो, शाही कुंभ बना रहे हैं
जहाँ नहीं है संगम कोई, गंग आरती करा रहे हैं।

आज विस्मित हो भीगी पलकें अस्तित्व अपना निहार रही
घुटन भरी साँसों से विवश चिथड़ा आँचल पसार रही
रूग्ण महानदी कराहती, शब्द मरहम लगा रहे हैं
जहाँ नहीं है संगम कोई, गंग आरती करा रहे हैं।

लुप्त हो गई मुस्कान अधरों की पैरी सोढ़ूल अनमनी-सी
कठपुतलियों-सी नाच रही है रेत मे बंधित सनी-सी
उपेक्षा की पराकाष्ठा ये, बाह्य पूजन करा रहे है
जहाँ नहीं है संगम कोई, गंग आरती करा रहे हैं।

चार दिन की चटक चाँदनी फिर अँधियारी रात है
बलात्कारित-सी लूटी जाती कुंभ देता सौगात है
चिता जलाने से पहले, ज्यूँ पूजन-अर्चन करा रहे हैं
जहाँ नहीं है संगम कोई, गंग आरती करा रहे हैं।

मैराथन दौड़ाने से क्या होगा? आरती कराने से क्या होगा?
श्रद्धा है तो रोज़ करो पूजन एक दिन दिए जलाने से क्या होगा ?
नहीं किसी को चिंता नदियों की, बस वार्षिक खेल खेला रहे हैं
जहाँ नहीं है संगम कोई, गंग आरती करा रहे हैं।

सदियों से जहाँ होते हैं कुंभ वो भी वार्षिक नहीं होते
फूलों के पेड़ उखाड़कर कैक्टस वहाँ नहीं बोते
कैसी छली जा रही त्रिवेणी, आस्था के नाम पर राजनीति भुना रहे हैं
जहाँ नहीं है संगम कोई, गंग आरती करा रहे हैं।

कुंभ मनाना ही है अगर तो सभी कुंभों-सा मनाओ
बरस-दर-बरस नदियों की छाती पर यूँ स्वार्थ का बाजार मत लगाओ
नदियों की अस्मिता को सब मिल दाँव पर लगा रहे हैं
जहाँ नहीं है संगम कोई, गंग आरती करा रहे हैं।

जल रही है महानदी

जल रही है महानदी
भभक रही है ज्वाला
चिर-अमृता आज होती
दहकता विष प्याला।

मौन साधिका क्या कहे
यंत्रणा सहती रहे
पीर भर उर अंतर में
अग्निपथ में बहती रहे।

ऐसा न हो लपट बढ़े
दग्ध सभी हो जाएँ
आओ सब मिलकर
महानदी को बचाएँ।

माँ चित्रोत्पला को बचाओ

अंधेर नगरी चौपट राजा
बजा रहे प्रवंचना बाजा
क्या मचलते जजबात हैं !
वाह-वाह अजब सौगात है !

कत्ल करो मातमपुर्सी मनाओ
अपने घड़ियाली आँसू बहाओ
स्वार्थ- लिप्सा की अग्नि में
सर्व नदियों को जलाओ।

परत-दर-परत मुरम बिछाओ
कूड़ा-करकट-मैला बहाओ
निश-दिवस बालू हटाओ
प्रतिवर्ष कुंभ आयोजन कराओ।

अंतिम- साँसें गिन रही है नदी
आकर अब गंगाजल पिलाओ
बाँटों पुरस्कृत करने रुपए
मैराथन की दौड़ लगाओ।

कितने संवेदनशील हो !
भोली जनता को भरमाओ
ओ मारकर सिर पीटने वालों!
जरा रुको, सोचो, सँभलो!

मैराथन दौड़ाने से क्या
नदी प्रवाहित हो पाएगी?
इस नौटंकी से क्या
महानदी मुस्काएगी?

ओ छद्मजाल बिछाने वालों
स्वार्थ के मकड़जालों
दिखावे का ढोल बजाने वालों
संस्कृति के कथित रखवालों।

समझ सको तो समझ जाओ
कोई भ्रम जाल में मत आओ
हर प्रदूषण से मुक्त करो अब
महानदी की साँसें लौटाओ।

अगर यही हाल रहा तो
वह दिन भी आ जाएगा
आज मैराथन दौड़ रहे वहाँ
कल क्रिकेट-मैदान हो जाएगा।

जागो! जागो हे जनमानस!
आओ! अब आगे आओ
हमारी जीवनदायिनी है
माँ चित्रोत्पला को बचाओ।

क्या दोगे भावी पीढ़ियों को?

छतीसगढ की है ये गौरव गंगा
हमारी सांस्कृतिक धरोहर है
जागो ! जागो हे जनमानस !
चित्रोत्पला बन रही सरोवर है।

करना होगा प्रयास भगीरथी
निज घृणित स्वार्थ से हटकर
एक नज़र तो निहारो सरि को
संवाद की सब बातें छोड़कर।

आज नहीं जागोगे तो कल
वह चिर निद्रा सो जाएगी
लुप्त हो जाएगी त्रिवेणी
पीढियाँ प्रश्न उठाएगी।

आयोजन तो सामयिक है
कल होगा या नहीं होगा
सदियों की निस्वार्थ- पथी को
हर हाल में बचाना होगा।

अरे ! जल से ही जीवन है
जीवन संकट में मत डालो
प्राकृतिक संपदा के पथ से
हर कंटक मिटा डालो।

पुकार रही, चीत्कार रही,
सुनो सपूतों सिसकियों को
वर्तमान आकुल होगा तो
क्या दोगे भावी पीढ़ियों को?

किसके आगे पट खोलूँ?

कब तलक और किसका, नयनों में बाठ तौलूँ?
पीर हिय बन गई प्रार्थना, किसके आगे पट खोलूँ?

सम्मान के, ऊँचे शिखर बिठाकर
अर्चन-पूजन जयकारे लगाकर
जीवन ही छिन लिया ऐसे
जी रही हूँ नित्य मर-मरकर
किस आस पर बोलो विश्वास करूँ?
पीर हिय बन गई प्रार्थना, किसके आगे पट खोलूँ?

किया खूब मनोरंजन सबने
खूब लूटी रे वाहवाही
जर्जर होती मेरी काया
दे रही प्रतिपल गवाही
साँझ उतर आई आँगन, अब किस पथ को डोलूँ?
पीर हिय बन गई प्रार्थना, किसके आगे पट खोलूँ?

काट लिया, पग-पग बाँट लिया
मुरूम-कचरों से पाट दिया
हृदय मरूस्थली हो गया
संवेदनाओं का ह्रास किया
सूख गई है छाती अब तो, बोलो ममता-करुणा कैसे घोलूँ?
पीर हिय बन गई प्रार्थना, किसके आगे पट खोलूँ?

पीड़ा तन की नहीं है उतनी

पीड़ा तन की नहीं है उतनी
जितनी मन की होती है
मेरे बिन कैसे जीयोगे?
सोचकर आँखें नम होती हैं
दुआ करती हूँ ख़ुश रहो सदा, चलो अब अलविदा बोलूँ
पीर हिय बन गई प्रार्थना, किसके आगे पट खोलूँ?

स्मृतियों में रहे सदा ये बात
इतिहास कभी न दोहराना
स्वस्फूर्त बहने दें सरियों को
नई पीढ़ियों को समझाना
साँसें घुट रही मेरी अब, कैसे जीवन रस घोलूँ
पीर हिय बन गई प्रार्थना, किसके आगे पट खोलूँ?

अनमोल विरासत जीवन की
सदा-सर्वदा ज़रूरी है
जीवन-पथ पर हार गई हूँ
कैसी अजब मज़बूरी है?
मूँद रही हैं ,पलकें देखो, मृत्यु-आलिंगन, को अब बाँहें खोलूँ
पीर हिय बन गई प्रार्थना, किसके आगे पट खोलूँ?

बढ़े चलो, हे सरणी-सुतों !

बढ़े चलो, हे सरणी-सुतों ! महानदी बुलाती है
बेड़ियों में जकड़ी प्रतिपल, मौन अश्रु बहाती है।

शीतल निर्मल पावन-धारा
आज कलुषित हो रही
चिर-चिर जागृत नीरा
सेज-कंटक सो रही
चुभ रहे हैं शूल तन पर
पीड़ाएँ अकुलाती हैं
बेड़ियों में जकड़ी प्रतिपल,
मौन अश्रु बहाती है।

जीवन को साँसें देती जो
आज साँस-साँस रो रही
अपनी सहृदयता का प्रतिफल
दारुण, कैसा ढो रही?
पीड़ा अतीव दामन में समेटे,
मृत्यु-पथ को जाती है
बेड़ियों में जकड़ी प्रतिपल,
मौन अश्रु बहाती है।

जागो-जागो मानस पुत्रों !
अबिलंब कुछ कर दिखाओ
जीवनदात्री चित्रोत्पला को
सह पथियों संग जगाओ
घुटती साँसें, प्रदूषित हो
बनी मैला-घाटी है
बेड़ियों में जकड़ी प्रतिपल,
मौन अश्रु बहाती है।

बढ़ो आज मिलजुलकर
कंटक पथ का दूर करो
महासरि की चिर आकांक्षा
अमल-नीर पूर करो
मिटाओ सारे अवरोधों को,
निर्गम-पथ की प्यासी है
बेड़ियों में जकड़ी प्रतिपल,
मौन अश्रु बहाती है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - सुधा शर्मा
जन्म - 19.09.1959
पति - श्री शरद शर्मा
माता - स्व. सुमन तिवारी
पिता - स्व.डॉ. जवाहर लाल तिवारी
पता - ब्राह्मण पारा, राजिम, जिला- गरियाबंद (छ.ग.)
मो.नं. - 9340919054, 9993048495

प्रकाशित
1. हिन्दी काव्य संग्रह 'सृजन समीक्षा' अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन।
2. हिन्दी खण्ड काव्य 'महानदी' 2017, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. छत्तीसगढ़ी खण्ड काव्य 'चंदन सुधि पुरवा कर डारेंव' 2016, जीविका प्रकाशन, नई दिल्ली
4. छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह 'जिनगी के बियार म' 2015, वैभव प्रकाशन रायपुर।
5. हिन्दी काव्य संग्रह 'पुरवा कहती है' 2010 वैभव प्रकाशन रायपुर।
6. विगत 35 वर्षो से सतत् लेखन एवं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शताधिक रचनाएं प्रकाशित एवं आकाशवाणी से कविताओं का प्रसारण।

सम्मान
1. राष्ट्रीय कवि चौपाल, कोटा (राज.) द्वारा सम्मानित।
2. छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग, प्रांतिय सम्मेलन में सम्मानित।
3. चेतना साहित्य कला परिषद, छत्तीगढ़ द्वारा सम्मानित।
4. न्यू ऋतंभरा साहित्य मंच, कुम्हारी द्वारा तुलसीदास सम्मान एवं साहित्य अलंकरण।
5. अस्मिता संघ, रायपुर द्वारा सम्मानित। 6. छत्तीगढ़ शोध संस्थान, रायपुर द्वारा सम्मानित।
7. श्री सतचंड़ी महायज्ञ विराट संत समागम में प्रतिभा सम्मान व पुरस्कृत।
8. वक्ता मंच, रायपुर द्वारा सर्वश्रेष्ठ हिन्दी कवि रत्न पुरस्कार एवं सम्मान।
9. भारतीय दलित साहित्य अकादमी की ओर से भीम चेतना अवार्ड।
10. संगम साहित्य एवं सांस्कृतिक समिति मगरलोड द्वारा सम्मानित।
11. अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन अधिवेशन 2005 में सम्मानित।
12. छत्तीसगढ़ राज्य अल्प संख्यक आयोग, रायपुर द्वारा सम्मानित।
13. विभिन्न अन्य स्थानों में कविता कहानी एवं कई प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत एवं सम्मानित।

Women आवाज़
आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
978-93-88102-52-0
मूल्य 40/-
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com